**दलहन संस्थान में विश्व दलहन दिवस का आयोजन**

आईसीएआर- भारतीय दलहन अनुसन्धान संस्थान **में विश्व दलहन दिवस** दिनांक 10 फ़रवरी, 2025 को एक **इंडस्ट्री-स्टेकहोल्डर कॉन्क्लेव** के आयोजन के साथ समारोहपूर्वक मनाया गया, इस अवसर पर डॉ. मसूद अली पूर्व निदेशक, भारतीय दलहन अनुसन्धान संस्थान मुख्य अतिथि एवं डॉ आर के त्रिपाठी, निदेशक, एनएसएआई ,नई दिल्ली कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे I संस्थान के निदेशक डॉ निदेशक डॉ जी.पी.दीक्षित ने सभी महानुभावों का संस्थान में स्वागत करते हुए कहा कि यह संस्थान के लिए गौरव के क्षण हैं I वैज्ञानिकों का आवाहन करते हुए मुख्य अतिथि ने संस्थान की उपलब्धियों की प्रशंसा की एवँ संस्थान के वर्तमान निदेशक डॉ जी.पी.दीक्षित द्वारा किये जा रहे कार्यों /उपलब्धियों की विशेष सराहना करते हुए कहा कि आपके कुशल नेतृत्व में संस्थान में शोध कार्य सुचारू रूप से चल रहा है I आपने वर्ष 2016 से मनाए जा रहे विश्व दलहन दिवस के महत्व को विस्तार से बताते हुए कहा कि चना मूंग जैसी दलहनी फसलों में हम पर्याप्त सफलता पा चुके हैं, और अब हमारा पूरा ध्यान अरहर और उड़द के उत्पादन को बढ़ाने पर है I हमारे वैज्ञानिक गण दलहनी फसलों की उन्नतशील प्रजातियां विकसित कर रहे हैं पिछले 10 वर्षों में दलहनी फसलों की 44 उन्नतशील प्रजातियां विकसित की गई है दलहनी फसलों की उत्पादकता में तेजी से वृद्धि हो रही है किंतु दलहन आयात को घटाने के लिए मिशन मोड में काम करने की आवश्यकता है वर्तमान बजट में इस कार्य हेतु एक हजार करोड़ की धनराशि आवंटित की गई है हम आशा करते हैं कि आने वाले कुछ वर्षों में हम बहुत अच्छे परिणाम देने में सफल होंगे I

विशिष्ट अतिथि डॉ त्रिपाठी ने प्रशन्नता ब्यक्त करते हुए कहा कि दलहन संस्थान अनवरत रूप से नई ऊँचाइयों को छू रहा है, साथ ही आपने दालों के उत्पादन एवम उत्पादकता को और अधिक बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि पूर्व की अपेक्षा हमारा सीड सेक्टर पहले से काफी सक्रिय एवं प्रभावी हो गया है, हमारे बीजों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व विभिन्न देशों में अपनाया जा रहा है और हम बीज-क्रांति की तरफ आगे बढ़ रहे हैं I हमारी मार्केटिंग अच्छी होनी चाहिए क्योंकि चीजें अब बदल गई है, हमने सीड हब पर बहुत अच्छा काम किया है इससे बीजों की उपलब्धता पहले से कहीं ज्यादा सुलभ हो चुकी है I इस संदर्भ में हमारे हित धारकों की भूमिका दिनों-दिन बढ़ रही है किन्तु इस क्षेत्र में अभी भी काफी चुनौतियां हैं, प्रजनक बीज उत्पादन की दिशा में और काम करने की आवश्यकता है बीजों की गुणवत्ता में और सुधार लाने की आवश्यकता है, लाइसेंसिंग के क्षेत्र में जो कमियां है उनको दूर करने की आवश्यकता है I

संस्थान के निदेशक डॉ जी.पी.दीक्षित ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों/ उपलब्धियों पर प्रकाश डाला, आपने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों एवम राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत दलहनों पर चल रही विभिन्न परियोजनाएं अत्यंत लाभप्रद रही हैं और उनसे उन्नत प्रजातियों , तकनीकी तथा मानव संसाधनों की दिशा में काफी सफलता मिली है I उन्होंने बताया कि हमें सरकार से पूरा सहयोग मिल रहा है और हम, आने वाले समय में दलहन उत्पादन में नए कीर्तिमान स्थापित करने की ओर अग्रसर हैं और हम किसानों के लिए ज्यादा से ज्यादा उन्नतशील बीज उपलब्ध करने की दिशा में सतत प्रयास कर रहे हैं , आपने बताया कि पूर्व की अपेक्षा अब संस्थान का स्तर बहुत प्रोन्नत हो चुका है I हमारा सर्वोपरि लक्ष्य है अरहर और उड़द के हो रहे आयात को घटाना क्योंकि यह सरकार द्वारा आदेशित भी है I हमारा फोकस पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप पर है, हम देश के प्रमुख हित धारकों के साथ न केवल क़रार कर रहे हैं बल्कि उनके साथ मिलकर परस्पर सहयोग के साथ काम कर रहे हैं और उसके अच्छे परिणाम भी हमारे सामने आ रहे हैं I उल्लेखनीय है कि संस्थान द्वारा विपिन हित धारकों के साथ 50 से ज्यादा समझौते किए जा चुके हैं और दस पेटेंट फाइल किए गए हैं आज के इस अवसर पर विभिन्न हित धारकों के साथ नौ समझौते किए गए I

इस अवसर पर संसथान द्वारा प्रकाशित कुछ प्रकाशनों – डिटेक्शन एंड डायग्नोसिस ऑफ़ फ़यटोफ्थोराकाजनी इन पीजनपी, दलहन भण्डारण के प्रमुख नाशी कीट एवं उनका प्रबंधन, और एक पॉकेट गाइड का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया I साथ ही प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये प्रगतिशील किसान भाइयों को भी दलहनी खेती में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया एवँ उन्नतशील बीज उपलब्ध कराए गए I इस अवसर पर प्रदेश से आए कई प्रगतिशील किसानों ने बताया कि उन्हें अपनी दलहनी खेती करने में आईपीआर से बहुत सहयोग मिल रहा है तकनीकी साहित्य, उन्नत किस्म के बीच और उपकरण समय-समय पर सुलभ कराए जा रहे हैं, और इसका श्रेय उच्च / आधुनिक तकनीकी,उत्पादकता दर में वृद्धि और सरकार की कुशल नीतियों को दिया जाना चाहिए I कार्यक्रम का संचालन डॉ राजकुमार मिश्र , प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया I

